



Krishanandu pandey

22 May 1981

10:20 PM

Raniganj W Dinajpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 121618701

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 22/05/1981  
दिन \_\_\_\_\_: शुक्रवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 22:20:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 43:46:24 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Raniganj W Dinajpu  
राज्य \_\_\_\_\_: West Bengal  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 25:56:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 87:58:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:21:52 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 22:41:52 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:03:25 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 14:42:47 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 04:49:26 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:20:25 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 13:30:59 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: ग्रीष्म  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 07:53:47 वृष  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 04:29:59 मकर

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: मकर - शनि  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: धनु - गुरु  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: पूर्वाषाढा - 2  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: शुक्र  
योग \_\_\_\_\_: शुभ  
करण \_\_\_\_\_: बव  
गण \_\_\_\_\_: मनुष्य  
योनि \_\_\_\_\_: वानर  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: क्षत्रिय  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: सर्प  
युँजा \_\_\_\_\_: अन्त्य  
हंसक \_\_\_\_\_: अग्नि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: धा-धर्मन्द्र  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: लौह - ताम्र  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मिथुन

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1903	ज्येष्ठ	1
पंजाबी	संवत : 2038	ज्येष्ठ	9
बंगाली	सन् : 1388	ज्येष्ठ	8
तमिल	संवत : 2038	वैकासी	9
केरल	कोल्लम : 1156	इदवम	8
नेपाली	संवत : 2038	ज्येष्ठ	9
चैत्रादि	संवत : 2038	ज्येष्ठ	कृष्ण 3
कार्तिकादि	संवत : 2038	वैशाख	कृष्ण 3

### पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 3  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:49:32  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 4  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : मूल  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:32:41 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : पूर्वाषाढा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : साध्य  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 16:10:44 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : शुभ  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : विष्टि  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 11:49:32 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : बव  
भयात \_\_\_\_\_ : 26:58:17  
भभोग \_\_\_\_\_ : 65:20:42  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : शुक्र 11 वर्ष 9 मा 10 दि

### घात चक्र

मास \_\_\_\_\_ : श्रावण  
तिथि \_\_\_\_\_ : 3-8-13  
दिन \_\_\_\_\_ : शुक्रवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : भरणी  
योग \_\_\_\_\_ : वज्र  
करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : गरुड़  
लग्न \_\_\_\_\_ : धनु  
सूर्य \_\_\_\_\_ : तुला  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मीन  
मंगल \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
बुध \_\_\_\_\_ : सिंह  
गुरु \_\_\_\_\_ : धनु  
शुक्र \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
शनि \_\_\_\_\_ : कन्या  
राहु \_\_\_\_\_ : कुम्भ

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

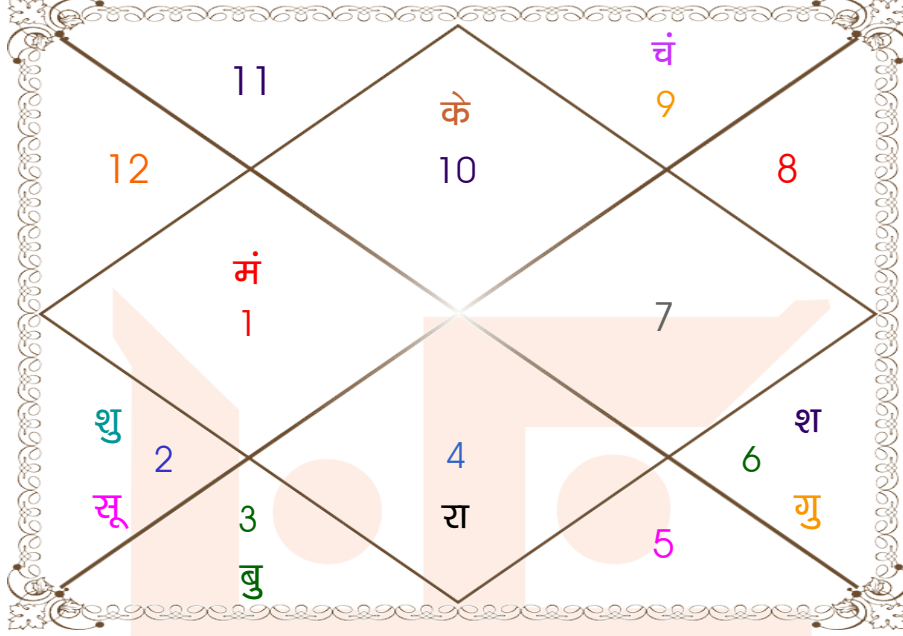
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

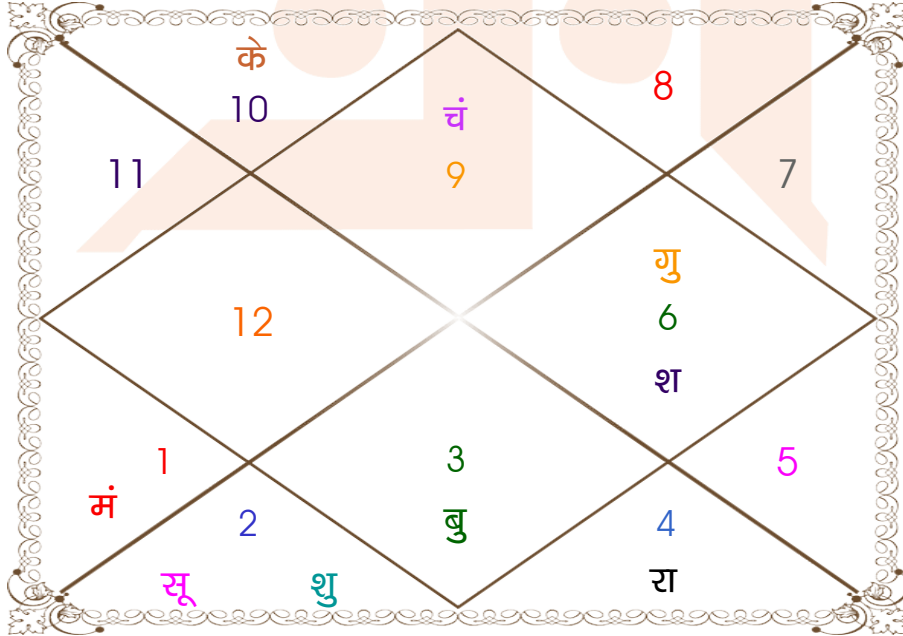
9835195382

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

	मं	शु सू	बु
			रा
के ल			
चं			श गु

### लग्न कुंडली

शु सू	मं	
बु		
रा		के ल
गु श		चं

विंशोत्तरी  
शुक्र 11वर्ष 9मा 10दि  
शुक्र

22/05/1981

03/03/2093

शुक्र	03/03/1993
सूर्य	04/03/1999
चन्द्र	03/03/2009
मंगल	03/03/2016
राहु	03/03/2034
गुरु	03/03/2050
शनि	03/03/2069
बुध	03/03/2086
केतु	03/03/2093

योगिनी

सिद्धा 4वर्ष 1मा 14दि  
संकटा

06/07/2021

06/07/2029

संकटा	17/04/2023
मंगला	07/07/2023
पिंगला	16/12/2023
धान्या	16/08/2024
भामरी	06/07/2025
भद्रिका	16/08/2026
उल्का	16/12/2027
सिद्धा	06/07/2029

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

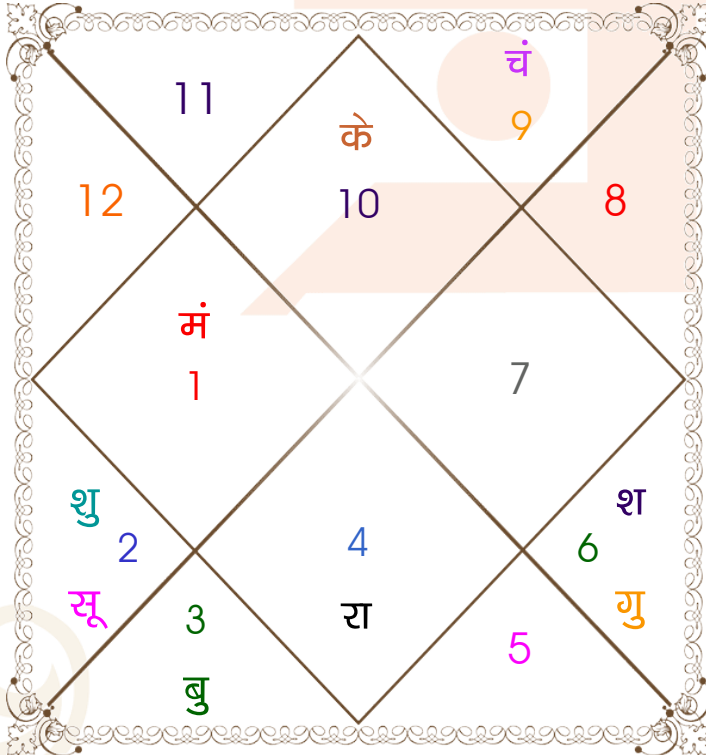
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न		मक	04:29:59	387:10:41	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	---
सूर्य		वृष	07:53:47	00:57:40	कृतिका	4	3	शुक्र	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
चंद्र		धनु	18:48:48	12:13:30	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	सम राशि
मंगल	अ	मेष	26:39:21	00:43:37	भरणी	4	2	मंगल	शुक्र	केतु	स्वराशि
बुध		मिथु	00:01:56	01:14:58	मृगशिरा	3	5	बुध	मंगल	बुध	स्वराशि
गुरु	व	कन्या	06:53:26	00:00:55	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
शुक्र		वृष	19:46:27	01:13:38	रोहिणी	3	4	शुक्र	चंद्र	केतु	स्वराशि
शनि	व	कन्या	09:33:19	00:01:21	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
राहु	व	कर्क	09:49:28	00:03:21	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	शुक्र	शत्रु राशि
केतु	व	मक	09:49:28	00:03:21	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष	व	वृश्चि	04:21:55	00:02:30	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	---
नेप	व	धनु	00:29:24	00:01:28	मूल	1	19	गुरु	केतु	केतु	---
प्लूटो	व	कन्या	28:21:51	00:01:12	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	---
दशम भाव		तुला	19:33:16	--	स्वाति	--	15	शुक्र	राहु	मंगल	--

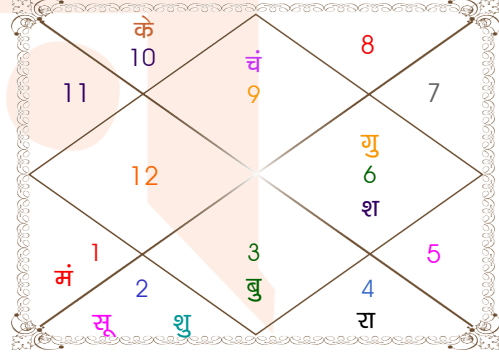
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:35:34

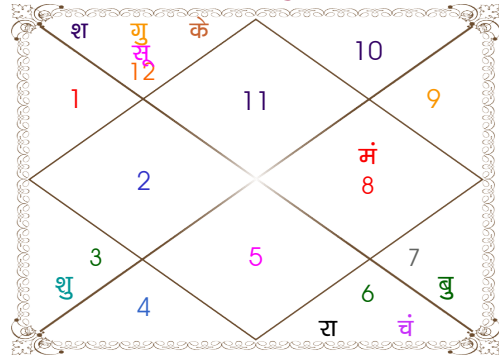
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	धनु 22:00:32	मकर 04:29:59
2	मकर 22:00:32	कुम्भ 09:31:05
3	कुम्भ 27:01:38	मीन 14:32:10
4	मेष 02:02:43	मेष 19:33:16
5	वृष 02:02:43	वृष 14:32:10
6	वृष 27:01:38	मिथुन 09:31:05
7	मिथुन 22:00:32	कर्क 04:29:59
8	कर्क 22:00:32	सिंह 09:31:05
9	सिंह 27:01:38	कन्या 14:32:10
10	तुला 02:02:43	तुला 19:33:16
11	वृश्चिक 02:02:43	वृश्चिक 14:32:10
12	वृश्चिक 27:01:38	धनु 09:31:05

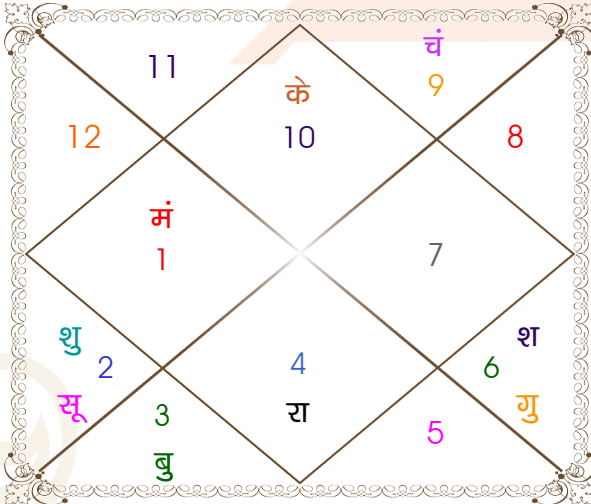
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मकर	04:29:59
2	कुम्भ	12:14:26
3	मीन	18:54:28
4	मेष	19:33:16
5	वृष	15:05:41
6	मिथुन	08:46:47
7	कर्क	04:29:59
8	सिंह	12:14:26
9	कन्या	18:54:28
10	तुला	19:33:16
11	वृश्चिक	15:05:41
12	धनु	08:46:47

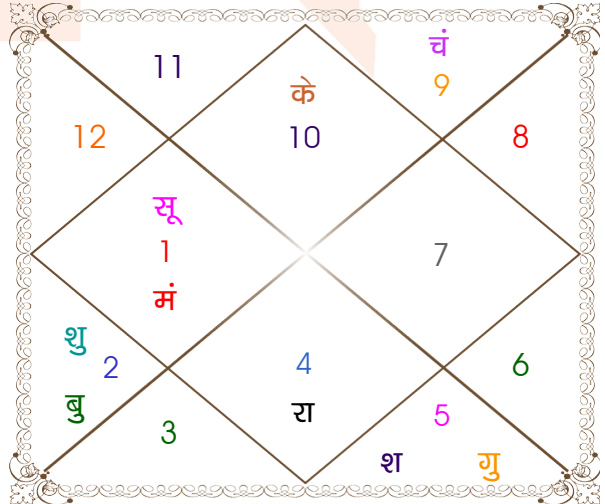
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 11 वर्ष 9 मास 10 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
22/05/1981	03/03/1993	04/03/1999	03/03/2009	03/03/2016
03/03/1993	04/03/1999	03/03/2009	03/03/2016	03/03/2034
00/00/0000	सूर्य 21/06/1993	चंद्र 02/01/2000	मंगल 30/07/2009	राहु 14/11/2018
00/00/0000	चंद्र 20/12/1993	मंगल 02/08/2000	राहु 18/08/2010	गुरु 09/04/2021
00/00/0000	मंगल 27/04/1994	राहु 01/02/2002	गुरु 25/07/2011	शनि 14/02/2024
22/05/1981	राहु 22/03/1995	गुरु 03/06/2003	शनि 01/09/2012	बुध 02/09/2026
राहु 03/05/1983	गुरु 08/01/1996	शनि 01/01/2005	बुध 30/08/2013	केतु 20/09/2027
गुरु 01/01/1986	शनि 20/12/1996	बुध 03/06/2006	केतु 26/01/2014	शुक्र 20/09/2030
शनि 03/03/1989	बुध 26/10/1997	केतु 02/01/2007	शुक्र 28/03/2015	सूर्य 15/08/2031
बुध 02/01/1992	केतु 03/03/1998	शुक्र 01/09/2008	सूर्य 03/08/2015	चंद्र 13/02/2033
केतु 03/03/1993	शुक्र 04/03/1999	सूर्य 03/03/2009	चंद्र 03/03/2016	मंगल 03/03/2034

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
03/03/2034	03/03/2050	03/03/2069	03/03/2086	03/03/2093
03/03/2050	03/03/2069	03/03/2086	03/03/2093	00/00/0000
गुरु 21/04/2036	शनि 06/03/2053	बुध 31/07/2071	केतु 30/07/2086	शुक्र 03/07/2096
शनि 02/11/2038	बुध 14/11/2055	केतु 27/07/2072	शुक्र 30/09/2087	सूर्य 03/07/2097
बुध 07/02/2041	केतु 23/12/2056	शुक्र 28/05/2075	सूर्य 04/02/2088	चंद्र 04/03/2099
केतु 14/01/2042	शुक्र 23/02/2060	सूर्य 02/04/2076	चंद्र 04/09/2088	मंगल 04/05/2100
शुक्र 14/09/2044	सूर्य 04/02/2061	चंद्र 02/09/2077	मंगल 01/02/2089	राहु 23/05/2101
सूर्य 03/07/2045	चंद्र 05/09/2062	मंगल 30/08/2078	राहु 19/02/2090	00/00/0000
चंद्र 02/11/2046	मंगल 15/10/2063	राहु 18/03/2081	गुरु 26/01/2091	00/00/0000
मंगल 09/10/2047	राहु 21/08/2066	गुरु 24/06/2083	शनि 06/03/2092	00/00/0000
राहु 03/03/2050	गुरु 03/03/2069	शनि 03/03/2086	बुध 03/03/2093	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 11 वर्ष 8 मा 28 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>राहु - बुध</b> 14/02/2024 02/09/2026	<b>राहु - केतु</b> 02/09/2026 20/09/2027	<b>राहु - शुक्र</b> 20/09/2027 20/09/2030	<b>राहु - सूर्य</b> 20/09/2030 15/08/2031	<b>राहु - चंद्र</b> 15/08/2031 13/02/2033
बुध 24/06/2024 केतु 18/08/2024 शुक्र 20/01/2025 सूर्य 08/03/2025 चंद्र 24/05/2025 मंगल 18/07/2025 राहु 04/12/2025 गुरु 07/04/2026 शनि 02/09/2026	केतु 24/09/2026 शुक्र 27/11/2026 सूर्य 16/12/2026 चंद्र 17/01/2027 मंगल 09/02/2027 राहु 07/04/2027 गुरु 28/05/2027 शनि 28/07/2027 बुध 20/09/2027	शुक्र 21/03/2028 सूर्य 15/05/2028 चंद्र 14/08/2028 मंगल 17/10/2028 राहु 30/03/2029 गुरु 24/08/2029 शनि 13/02/2030 बुध 18/07/2030 केतु 20/09/2030	सूर्य 07/10/2030 चंद्र 03/11/2030 मंगल 22/11/2030 राहु 11/01/2031 गुरु 23/02/2031 शनि 16/04/2031 बुध 02/06/2031 केतु 21/06/2031 शुक्र 15/08/2031	चंद्र 30/09/2031 मंगल 01/11/2031 राहु 22/01/2032 गुरु 04/04/2032 शनि 30/06/2032 बुध 15/09/2032 केतु 17/10/2032 शुक्र 16/01/2033 सूर्य 13/02/2033
<b>राहु - मंगल</b> 13/02/2033 03/03/2034	<b>गुरु - गुरु</b> 03/03/2034 21/04/2036	<b>गुरु - शनि</b> 21/04/2036 02/11/2038	<b>गुरु - बुध</b> 02/11/2038 07/02/2041	<b>गुरु - केतु</b> 07/02/2041 14/01/2042
मंगल 07/03/2033 राहु 04/05/2033 गुरु 24/06/2033 शनि 24/08/2033 बुध 17/10/2033 केतु 08/11/2033 शुक्र 11/01/2034 सूर्य 30/01/2034 चंद्र 03/03/2034	गुरु 15/06/2034 शनि 17/10/2034 बुध 04/02/2035 केतु 21/03/2035 शुक्र 29/07/2035 सूर्य 06/09/2035 चंद्र 10/11/2035 मंगल 26/12/2035 राहु 21/04/2036	शनि 14/09/2036 बुध 23/01/2037 केतु 18/03/2037 शुक्र 19/08/2037 सूर्य 05/10/2037 चंद्र 21/12/2037 मंगल 13/02/2038 राहु 01/07/2038 गुरु 02/11/2038	बुध 27/02/2039 केतु 16/04/2039 शुक्र 01/09/2039 सूर्य 13/10/2039 चंद्र 21/12/2039 मंगल 07/02/2040 राहु 10/06/2040 गुरु 29/09/2040 शनि 07/02/2041	केतु 27/02/2041 शुक्र 24/04/2041 सूर्य 11/05/2041 चंद्र 09/06/2041 मंगल 29/06/2041 राहु 19/08/2041 गुरु 03/10/2041 शनि 26/11/2041 बुध 14/01/2042
<b>गुरु - शुक्र</b> 14/01/2042 14/09/2044	<b>गुरु - सूर्य</b> 14/09/2044 03/07/2045	<b>गुरु - चंद्र</b> 03/07/2045 02/11/2046	<b>गुरु - मंगल</b> 02/11/2046 09/10/2047	<b>गुरु - राहु</b> 09/10/2047 03/03/2050
शुक्र 25/06/2042 सूर्य 13/08/2042 चंद्र 02/11/2042 मंगल 29/12/2042 राहु 24/05/2043 गुरु 01/10/2043 शनि 03/03/2044 बुध 19/07/2044 केतु 14/09/2044	सूर्य 28/09/2044 चंद्र 23/10/2044 मंगल 09/11/2044 राहु 22/12/2044 गुरु 30/01/2045 शनि 18/03/2045 बुध 28/04/2045 केतु 15/05/2045 शुक्र 03/07/2045	चंद्र 12/08/2045 मंगल 10/09/2045 राहु 22/11/2045 गुरु 26/01/2046 शनि 13/04/2046 बुध 21/06/2046 केतु 19/07/2046 शुक्र 08/10/2046 सूर्य 02/11/2046	मंगल 22/11/2046 राहु 12/01/2047 गुरु 26/02/2047 शनि 21/04/2047 बुध 09/06/2047 केतु 28/06/2047 शुक्र 24/08/2047 सूर्य 10/09/2047 चंद्र 09/10/2047	राहु 17/02/2048 गुरु 13/06/2048 शनि 30/10/2048 बुध 03/03/2049 केतु 23/04/2049 शुक्र 16/09/2049 सूर्य 30/10/2049 चंद्र 11/01/2050 मंगल 03/03/2050

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र  
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382  
9835195382

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	4
भाग्यांक	1
मित्र अंक	1, 4, 6
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	शुक्र, शनि, बुध
शुभ ग्रह	शुक्र, शनि, बुध
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	मेष, कन्या, वृश्चिक
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	नीलम
शुभ उपरत्न	जमुनिया, बिलौर
भाग्य रत्न	पन्ना
शुभ धातु	लौह
शुभ रंग	काला
शुभ दिशा	पश्चिम
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह
दान अन्न	उड़द
दान द्रव्य	तेल

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

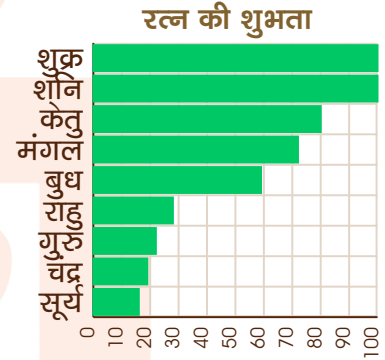
9835195382

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
हीरा	शुक्र	100%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	100%	भाग्योदय, स्वास्थ्य, धन
लहसुनिया	केतु	80%	स्वास्थ्य, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	72%	सुख, धनार्जन
पन्ना	बुध	59%	शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
गोमेद	राहु	28%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय
पुखराज	गुरु	22%	नेष्ट भाग्य, व्यय, पराक्रम हानि
मोती	चंद्र	19%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	16%	सन्तति कष्ट, दुर्घटना



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	03/03/1993	0%	0%	72%	65%	22%	100%	100%	41%	86%
सूर्य	04/03/1999	41%	31%	78%	59%	34%	98%	92%	3%	67%
चंद्र	03/03/2009	28%	44%	72%	65%	22%	100%	100%	3%	67%
मंगल	03/03/2016	28%	31%	84%	43%	34%	100%	100%	3%	86%
राहु	03/03/2034	0%	0%	59%	59%	22%	100%	100%	52%	67%
गुरु	03/03/2050	28%	31%	78%	43%	47%	98%	100%	28%	80%
शनि	03/03/2069	0%	0%	59%	65%	22%	100%	100%	41%	67%
बुध	03/03/2086	28%	0%	72%	72%	22%	100%	100%	28%	80%
केतु	03/03/2093	0%	0%	78%	59%	22%	100%	92%	3%	92%

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	21/12/1984-01/06/1985 17/09/1985-17/12/1987	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990 15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----

### द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----

### तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	अल्प बचत
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	कम खर्च
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	दाम्पत्य कलह

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्म समय में मंगल की स्थित कुंडली में चतुर्थ भाव में है अतः आप मंगली दोष से युक्त हैं परन्तु शास्त्रों के नियमानुसार आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाता है। अतः आपके जीवन में इस मंगली योग का शुभ प्रभाव पूर्ण रूप से विद्यमान रहेगा जिससे आप जीवन में समस्त प्रकार के सुख साधनों एवं ऐश्वर्य से युक्त रहेंगे आप पूर्ण रूपेण धनार्जन करके सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

शारीरिक रूप से आप स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त रहेंगे। आपके विवाह में इस मंगल के प्रभाव से अल्प मात्रा में विलम्ब अवश्य हो सकता है। इससे कोई अशुभ परिणाम नहीं होगा फलतः विवाह अत्यन्त ही सुखद एवं हर्ष के वातावरण में सम्पन्न होगा। इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं या व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के पश्चात् यदा कदा अल्प मात्रा में आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होगा लेकिन इससे कोई हानि नहीं होगी।

जन्म कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित मंगल के प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे। मकान एवं जायदाद आदि का स्वामित्व भी आप प्राप्त करेंगे। जिससे आपका सांसारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि होने से पत्नी का स्वास्थ्य यदा कदा मध्यम रहेगा परन्तु उसका कोई विशेष अशुभ प्रभाव नहीं होगा जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य सुख का उपभोग कर सकेंगे। चतुर्थ भाव से दशम भाव पर मंगल की दृष्टि आपके कार्य क्षेत्र को सुदृढ़ता प्रदान करेगी परिणामस्वरूप आप कोई उच्च पदाधिकारी या सम्मानित पद को प्राप्त करके समाज में पूर्ण मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। साथ ही एकादश भाव पर भी मंगल की दृष्टि से आपके आय साधनों में वृद्धि होगी तथा अपने पराक्रम एवं बुद्धि बल से आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा जीवन में समस्त

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त होकर आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे इस प्रकार आपका सम्पूर्ण दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक शुभ एवं सुखद बनाने के लिए आप किसी भी गौर मांगलिक या जिसका मंगली दोष उचित नियम के अनुसार भंग हो रहा हो ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए। यदि कुंडली मिलान के समय आप इस बात का पूर्ण रूप से ध्यान रखेंगे तो आप का सम्पूर्ण दाम्पत्य जीवन सुखैश्वर्य सौभाग्य तथा धन सम्पत्ति से सर्वदा सुसम्पन्न रहेगा तथा आप प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

इसके अतिरिक्त इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि कन्या की कुण्डली में भी मंगल चतुर्थ भाव में न हो क्यों कि समान भावों में स्थित मंगल जीवन में अनावश्यक समस्याएं तथा बाधाएं उत्पन्न करते हैं जिससे दाम्पत्य जीवन में कटुता उत्पन्न होती है। इससे आपको सुख संसाधनों की प्राप्ति तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता मान सम्मान एवं उन्नति में अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त अन्य भावों में स्थित मंगल यदि दोषमुक्त हो रहा हो तो दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है साथ ही आपसी संबंधों में भी मधुरता बनी रहेगी तथा किसी भी प्रकार का तनाव उत्पन्न नहीं होगा। अतः सुखी एवं आदर्श दाम्पत्य जीवन के लिए सावधानी पूर्वक विचार करके अन्तिम निष्कर्ष लेना चाहिए।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- नवम् भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आर्शीवाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

## ग्रह फल

### सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

वृष राशि में रवि हो तो जातक शान्त, व्यवहार कुशल, पाप भीरु, स्वाभिमानी मुखरोगी एवं स्त्रीद्वेषी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

### चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

## मंगल

चतुर्थभाव में मंगल हो तो जातक सन्ततिवान्, मातृसुखहीन, वाहनसुख, प्रवासी, अग्निभययुक्त, अल्पमृत्यु चा अपमृत्यु प्राप्त करने वाला, कृषक, बन्धुविरोधी एवं लाभ युक्त होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

## बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

## गुरु

नवमभाव में गुरु हो तो जातक पराक्रमी, धर्मात्मा, पुत्रवान, बुद्धिमान, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

## शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

वृष राशि में शुक्र हो तो जातक सुन्दर, ऐश्वर्यवान्, दानी, सदाचारी, सात्त्विक, परोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, दृढ़, स्वतन्त्रकामुक, शौकीन तबीयत, संगीत-नृत्य तथा अन्य कलाओं में रुचि एवं आलसी होता है।

## शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्ता, ईर्ष्यायु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

## राहु

सप्तम भाव में राहु हो तो चतुर, लोभी, दुराचारी, दुष्कर्मी वातरोगजनक, भ्रमणशील, व्यापार से हानिदायक एवं स्त्रीनाशक होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

## केतु

लग्न (प्रथम) में केतु हो तो जातक चंचल मूर्ख दुराचारी, भीरु तथा वृश्चिक राशि में हो तो सुखकारक, धनी एवं परिश्रमी होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराकमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु  
( 03/03/2016 - 03/03/2034 )

राहु की महादशा 03/03/2016 को आरम्भ और 03/03/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु सप्तम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि लग्न पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सम्पत्ति तथा वाहन की प्राप्ति, साझेदारों से लाभ और स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या हुई होगी। राहु की इस दशा में आपको यात्रा तथा वाणिज्य-व्यवसाय में लाभ तथा विदेश में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको पित्तरोग, उदररोग, ज्वर, सरदर्द, फोड़ा-फुन्सी, व्रण (फोड़ा), अल्सर आदि रोग हो सकते हैं। सन्तुलित भोजन तथा अन्य उपायों से इनमें से बहुतों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। आपको वाणिज्य-व्यापार, यात्रा तथा विदेश से लाभ होगा। किसी भी अनुबंध या समझौते के प्रति सावधानी बरतनी चाहिए। आपको सट्टे तथा निवेश में पर्याप्त लाभ होगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए दवा, कम्प्यूटर, रसायन, वैमानिकी, उड्डयन तथा मशीन से संबंधित क्षेत्रों का चयन कर सकते हैं। दवा, एण्टीबायोटिक, यंत्र-उपकरण, मशीनरी आदि का व्यापार-लाभदायक हो सकता है। सेवारत लोगों को पर्याप्त लाभ मिलेगा और पदोन्नति तथा स्थानान्तरण होगा। आपको अपने सहायकों व सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय से जुड़े लोगों की जीवन-चर्या में प्रगति होगी, विदेशी स्रोतों से लाभ, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा व्यापार में विस्तार होगा। जीवन चर्या में प्रगति के लिए यह दशा अत्यन्त सुन्दर है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सारा सुख प्राप्त होगा। आपको जमीन जायदाद से लाभ तथा स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपको भू-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आप प्रेरित और दृढ़निश्चय होंगे और बड़ी संख्या में शिक्षा से अलग गतिविधियों में भाग लेंगे। दवा, कम्प्यूटर-विज्ञान, गणित, विज्ञान, इन्जीनियरिंग आदि विषयों में आपकी रुचि होगी। आप में नेतृत्व-गुण विद्यमान हैं जो इस दशा के दौरान सामने आएंगे।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की छोटी यात्रा, उत्तम स्वास्थ्य और जीवन-चर्चा में उन्नति होगी। आपके जीवन साथी को सम्पत्ति, कुछ मामूली स्वास्थ्य-समस्या और वाणिज्य-व्यापार में सफलता मिलेगी। आपकी माता की अचल सम्पत्ति का संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। जबकि पिता को समृद्धि, सम्पत्ति तथा अर्थ प्राप्ति के अनेक अवसर मिलेंगे। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ, आय में अचानक वृद्धि और शिक्षा में समस्या होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को ख्याति, यश, पद और आराम मिलेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा, जीवनचर्या में उन्नति और विवाह होगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान यात्रा, मामूली स्वास्थ्य समस्या और विरोधियों पर विजय मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में उत्तम शिक्षा, बच्चों से सुख, सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा के दौरान खुशहाली, लम्बी यात्रा और पिता से लाभ मिलेगा। केतु कुछ समस्या उत्पन्न करेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में चौतरफा समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य, सम्पत्ति तथा सफलता मिलेगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा में हर प्रकार का लाभ मिलेगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान प्रगति और जीवन में सफलता मिलेगी जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, व्यवसाय में प्रगति और व्यापार में लाभ होगा।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

**अंतर्दशा :- राहु - बुध  
( 14/02/2024 - 02/09/2026 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/03/2016 को प्रारंभ होकर 03/03/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 14/02/2024 को प्रारंभ होकर 02/09/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठ भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। छठे भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस दशा की अवधि में आपकी वाणी कटु हो सकती है, आलस्य की भावना हो सकती है। शिक्षा में बाधा आ सकती है। आप झगड़ालू और दिखावापसंद हो सकते हैं। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। आपका व्यवहार उत्तेजनापूर्ण हो सकता है, इस कारण कोई स्नायविक या मानसिक व्याधि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - केतु  
( 02/09/2026 - 20/09/2027 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/03/2016 को प्रारंभ होकर 03/03/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 02/09/2026 को प्रारंभ होकर 20/09/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रूपरेखा आदि का परिचायक है।

लग्न में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप किसी व्याधि से ग्रसित हो सकते हैं। शरीर दुर्बल हो सकता है। फोड़े-फुंसी हो सकते हैं। साख्र में गिरावट आ सकती है। मष्तिष्क बेचैन रह सकता है। उत्तेजना अधिक रहेगी। इस कारण विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है। यह अंतर्दशा अशुभ हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के वैदिक मंत्र के 8000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - शुक्र  
( 20/09/2027 - 20/09/2030 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/03/2016 को प्रारंभ होकर 03/03/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 20/09/2027 को प्रारंभ होकर 20/09/2030 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप रोमांटिक हो सकते हैं। राजनीति में दिलचस्पी हो सकती है। लोकप्रियता बढ़ेगी, पर्याप्त मित्र होंगे। योग्यता के बल पर धन कमाएंगे। सट्टेबाजी में भी लाभ हो सकता है। सरकार से पुरस्कार मिल सकता है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 60,000 (साठ हजार) जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - सूर्य  
( 20/09/2030 - 15/08/2031 )**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 03/03/2016 को प्रारंभ होकर 03/03/2034 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 20/09/2030 को प्रारंभ होकर 15/08/2031 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घर से दूर जाकर रह सकते हैं। जंगल आदि में निवास हो सकता है। अप्रसन्न हो सकते हैं। हृदय रोग हो सकता है। सावधान रहना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- आटा, गुड़ और तांबे के सिक्के दान करें।
- बहते पानी (नदी आदि) में तांबे के सिक्के डालें।

**ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र**  
लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382  
9835195382